अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

किन्नरों के जीवन की त्रासदी 'मैं पायल'

शोधार्थी, संजय कुमार यादव
हिंदी विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय,हापुर
Email-sy203343@gmail.com

शोध सार -

हिंदी साहित्य की बात करें या आधुनिक साहित्य की, तो किन्नर या थर्ड जेंडर समुदाय को विषय बनाकर बहुत कम लेखन हुआ है। हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन पर आत्मकथाओं की अत्यधिक कमी देखी जाती है। महेंद्र भीष्म द्वारा रचित 'मैं पायल' हिंदी का पहला जीवनीपरक उपन्यास है, जो वास्तविक जीवन में किन्नर गुरु पायल सिंह जी के अनुभवों पर आधारित है।

इस उपन्यास में उपन्यासकार ने एक किन्नर बच्चे के जन्म से लेकर उसके जीवन के हर पहलू को प्रस्तुत किया है। भारत सहित पूरे विश्व में किन्नरों की संख्या लाखों में है, फिर भी उन्हें सत्ता, संपत्ति, संविधान, समाज, संस्कृति, साहित्य और भाषा से जुड़े सभी अधिकारों से सदियों से वंचित रखा गया है। बेरोजगारी और शिक्षा के अभाव ने उन्हें समाज में लोगों के आगे हाथ फैलाने के लिए विवश कर दिया है। इससे भी उनकी मौलिक आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पातीं, जिसके कारण उन्हें अनिच्छा से वेश्यावृत्ति के गंदे दलदल में उतरना पड़ता है। देश के सार्वजनिक स्थानों पर उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। सामान्य लोगों के लिए बनाए गए अस्पतालों में उन्हें समुचित इलाज नहीं मिलता, स्कूलों में दाखिला नहीं हो पाता, और सरकारी संस्थानों में रोजगार के अवसर नहीं मिलते। हम समाज के लोग उन्हें घृणा और अश्लीलता की दृष्टि से देखने के आदि हो चुके हैं। महेंद्र भीष्म का यह उपन्यास बचपन में ही परिवार और समाज द्वारा तिरस्कृत होकर नारकीय जीवन जीने को मजबूर लाखों किन्नरों का प्रतिनिधित्व करता है।

बिज शब्द -

विमर्श,थर्ड जेंडर,किन्नर,समुदाय,अवधारणा,अधिकार,तीसरा लिंग,घृणा,मानवीय दर्जा,संविधान भारतीय,संस्कृति, वेश्यावृत्ति,अश्लीलता,तिरस्कार,प्रतिनिधित्व

किन्नरों के जीवन की त्रासदी 'मैं पायल'

महेंद्र भीष्म द्वारा रचित *"मैं पायल"* (2016) एक आत्मकथात्मक एवं जीवनीपरक उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार ने लखनऊ की किन्नर गुरु पायल सिंह जी के संपूर्ण जीवन संघर्ष को आधार बनाकर कथानक की संरचना की है। यह उपन्यास अत्यंत सुंदर, वस्तुनिष्ठ और गहराई से किन्नरों के जीवन की दुर्दशा, त्रासदी और पीड़ा को पारदर्शी ढंग से प्रस्तुत करता है।

चूंकि यह एक जीवनीपरक उपन्यास है, इसलिए इसके कथानक में कल्पना का समावेश नहीं है। इसमें समाज द्वारा एक किन्नर पर थोपे गए कटु यथार्थ का सजीव वर्णन किया गया है। उपन्यासकार के अनुसार:

"मैं पायल का आधार किन्नर समुदाय और पायल सिंह जी के जीवन संघर्ष की गाथा है। इसमें प्रत्येक किन्नर के अतीत के संघर्ष की एक झलक परिलक्षित होती है। विस्थापन का दंश कष्टकारी होता है, फिर चाहे वह परिवार, समाज या अपनी मिट्टी से जुड़ा हो।" 1

उपन्यास के शुरुआत में -

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

"अम्मा बताती हैं कि जब मैं पैदा हुई थी, उसी समय रामबहादुर के घर भी एक लड़की ने जन्म लिया। जैसे ही मेरी अप्रिय सी किलकारी गूंजी, लोगों के कानों में एक निराशा सी भर गई। कारण यह था कि मुझसे पहले मेरी तीन बड़ी बहनें थीं, और एक बड़ा भाई भी था, जिसे अम्मा अपनी कोख से जन्म दे चुकी थीं। मैं उनकी पाँचवीं संतान थी–एक हिजड़ा बच्चा। संसार में आते ही मैंने सबको दुख, कष्ट और संताप दे दिया। इस बार सभी को पूरी उम्मीद थी कि अम्मा एक बेटा ही जन्म देंगी। उम्मीद तो पहले दीदी के जन्म के बाद से ही थी, लेकिन जब दूसरी, तीसरी और चौथी बार लगातार कन्या का जन्म हुआ, तो अम्मा और उनकी कोख को गालियाँ दी जाने लगीं। जैसे बेटियों को जन्म देना उनके ही हाथ में हो! सारा दोष उन्हीं पर मढ़ दिया जाता और उन्हें कोसा जाता, दिन-रात। लेकिन माँ तो माँ होती है–चाहे उसकी संतान पुत्र हो या पुत्री, वह अपने हर बच्चे को समान प्रेम देती है। उसकी ममता में कोई भेदभाव नहीं होता।"2

लेखक ने उपरोक्त कथन के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एक मां के लिए उसके सभी बच्चे एक समान होते हैं।

पायल सिंह जी का जन्म लखनऊ कैंट में स्थित कमांड हॉस्पिटल में हुआ था। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र, एक क्षत्रिय परिवार में जन्म लेने वाली पायल उर्फ़ जुगनी की कहानी है, जो एक किन्नर के रूप में जन्मी पांचवीं संतान है। जुगनी के चचेरे बाबा शिवदत्त सिंह जी भारतीय थल सेवा में सूबेदार पद से सेवानिवृत्त होकर अपने गांव में ही खेती-बाड़ी किया करते थे। वह संपूर्ण जीवन अभिभावाहित ही रहे। उन्हीं की पेंशन और खेती-बाड़ी से जो आय प्राप्त होती थी, उसी से परिवार का पालन-पोषण अच्छी तरह हो जाता था। जब जुगनी छह वर्ष की थी, तभी बाबा की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। नायिका जुगनी के पिता, राम बहादुर, के पास अपनी जमीन होने के बावजूद परिवार की स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए वह पैसे के लिए ट्रक ड्राइवर का काम करते हैं।

"एक ट्रक ड्राइवर में जितनी बुराइयाँ होनी चाहिए, वे सब मेरे पिताजी में मौजूद थीं। उनकी सबसे बुरी आदत दारू पीने की थी। इसके अलावा, हम बहनों पर चीखना, चिल्लाना, डाँटना और पीटना उनका शगल बन गया था।

दारू के नशे में वह हमें इतनी बेरहमी से पीटते थे कि आज भी रूह काँप उठती है। अम्मा नाहक ही हम बच्चों को बचाने या पक्ष लेने के कारण अक्सर पिट जाती थीं। नशे में पिताजी का चेहरा वीभत्स हो जाता था। जो भी हाथ में आ जाता, उसी से पीटना शुरू कर देते थे, तब तक जब तक वह टूट न जाए या वह स्वयं थक-हारकर नशे की झोंक में लड़खड़ाकर गिर न जाएँ।"3

जन्म के बाद जुगनी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बहुराजमऊ गाँव में संयुक्त परिवार के साथ रहने लगी। परिवार में आए दिन झगड़े होते रहते थे। दारू पीने के बाद पिताजी अम्मा को बहुत गालियाँ देते, मारते-पीटते और सताते रहते थे।

तब जुगनी मन ही मन दुखी होकर सोचती–

"मैं सोचती हूँ, ये कैसे लोग हैं! रात में लड़ाई, दिन में दोस्ती। बालसुलभ अटकलें ही लगती हैं, कुछ समझ नहीं आता कि आखिर माजरा क्या है।"4

उपन्यास के प्रारंभ में ही, जुगनी के जन्म के बाद उसके पिता, राम बहादुर सिंह, को पता चल जाता है कि जुगनी (पायल) एक किन्नर के रूप में जन्मी है। यह जानकर वह बहुत दुखी होते हैं और समाज

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

का भय उन्हें सताने लगता है। उन्हें चिंता होती है कि लोग क्या कहेंगे–कहीं वे उन्हें "हिजड़े का बाप" कहकर न पुकारें या उन्हें इसी पहचान से न देखा जाए। जुगनी की शारीरिक बनावट, कद-काठी और ऊँचाई लड़कों जैसी थी, इसलिए उसके पिता उसे एक लड़के के रूप में देखना पसंद करते थे। लेकिन जुगनी को लड़की के वेशभूषा में रहना अच्छा लगता था। साथ ही, वह एक लड़की की तरह जीवन व्यतीत करना चाहती थी, क्योंकि उसके शरीर में भी लड़कियों की तरह बदलाव आने लगे थे। इसी कारण वह लड़कियों के कपड़े पहन लेती थी।

जुगनी को लड़की के रूप में देखकर उसके पिता, क्रोधित होकर उसकी माँ से कहते हैं–

"कान खोलकर सुन ले, कमलेश की अम्मा! अगली बार जब मैं आऊँ और यह साला हिजड़ा लड़की के कपड़े पहने मिला या घर के बाहर निकला, तो मैं अपने ही हाथों इसका खून कर दूँगा।"5

जुगनी के पिता का मन जुगनी को इतना मारने-पीटने के पश्चात भी नहीं भरता, तो वह जुगनी के गले में रस्सी बाँधकर उसके पैरों को ईंटों के बने चट्टे पर टिका देते हैं। किंतु फिर भी जुगनी बच जाती है और रोती-काँपती हुई मन ही मन कोसती है–

"क्षत्रियों के खानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसे सारा श्रेय मेरा ही हो! मैं हिजड़ा हूँ, ठीक है, पर इसमें मेरा क्या कसूर? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा का भी तो कोई दोष नहीं, बल्कि पिताजी का भी नहीं। फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों? लोग अपने विकलांग बच्चों को पालते हैं, फिर हिजड़ा बच्चे को क्यों नहीं? क्योंकि हिजड़ा बच्चा होना वे अपनी आन, बान, शान के खिलाफ समझते हैं। क्षत्रियों में सिंह पैदा होते हैं, हिजड़े नहीं! उफ्फ... पता नहीं, क्या-क्या विचार मेरे दिल-दिमाग में छाए रहते हैं!"6

किन्नर समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को लगभग इसी तरह के व्यवहार का शिकार होना पड़ता है भले ही वह आर्थिक और सामाजिक तौर पर स्थित अलग-अलग हो जुगनी के पिता और उसके परिवार की स्थिति ठीक-ठाक थी परंतु समाज का दबाव उसके पिता को परेशान किया रहता था जुगनी के लिए उसके पिता दिन प्रतिदिन बढ़ती हिंसा इसी बात का घोतक है कि जब समाज में मान मर्यादा पर आती है तब इंसान अपने संतान को भी बलि चढ़ाने से नहीं हटता वह यहां तक कि वह अपने प्राणप्रिय संतान से भी घृणा और इर्ष्या करने लगता है और अपने हाथों ही उसकी हत्या करने पर आ जाता है ।

"मुझे लगता था जिजीविषा जीवनदायिनी होती है नींद या बेसुधी मेरे लिए जानलेवा हो सकती थी मेरी गर्दन रस्सी में फांसी थी गर्दन में खिंचाव और भीषण दर्द हो रहा था मुंह से सारी शक्ति से चीखने पर भी आवाज नहीं निकल रही थी चिक स्वयं को ही सुनाई नहीं दे रही थी ।"7

जुगनी के विद्यालय जीवन के समय ही जुगनी को जुगनू बनाने की उसके पिता की तमाम कोशिशें बेकार हो जाती हैं, क्योंकि वे यह नहीं समझ पाते कि उनकी बच्ची की आंतरिक रचना और उसका मानसिक व्यवहार उसके जीवन से कुछ और ही इच्छा रखता है। जैसे-जैसे जुगनी बड़ी हो रही थी, वैसे-वैसे उसकी लड़की होने की इच्छा और अधिक प्रबल होती जा रही थी। इसी कारण पिता की नफरत और हिंसा भी जुगनी के प्रति और अधिक बढ़ती जा रही थी।

"पिताजी ने पास रखी बाल्टी में भरे पानी से मुझे नहला दिया, फिर वहीं रखी चप्पल को पानी में डुबोकर तब तक मेरे नग्न शरीर पर बरसाते रहे, जब तक मेरी चमड़ी उधड़ नहीं गई। रस्सी का एक छोर बाँधकर, दूसरे छोर का फंदा मेरी गर्दन में डालकर पिताजी ने मुझे फांसी दे दी थी।"8

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

अपने ही संतान को इतनी क्रूरता पूर्वक मारना, पीटना और हत्या करने का प्रयास भारतीय संस्कार तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन यह एक अत्यंत असमंजस से भरा सवाल है। जुगनी के बड़े भाई की गलतियों को उसके पिता नज़रअंदाज कर देते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि लड़का अगर गलत भी करता है, तो इससे परिवार की इज्जत पर कोई असर नहीं पड़ता। उसे नशा करने और विभिन्न प्रकार के व्यसनों में लिप्त रहने की पूरी छूट दी जाती है।वहीं, जुगनी को उसके ही परिवार में बार-बार यह एहसास करवाया जाता है कि वह एक हिजड़ा है और उसका जन्म लेना ही गलत है। निरंतर प्रताड़नाओं के कारण जुगनी के भीतर असुरक्षा की भावना पनपने लगी, साथ ही उसमें अपराधबोध भी बढ़ता गया। इन सबके चलते उसके मन में आत्महत्या का विचार बार-बार आने लगा। सबसे पहले वह सोचती है–

"कुएं में छलांग लगा देगी ना रहेगी यह हिजड़ा देह न रहेंगे ताने जो मुझे और मेरे परिवार को मेरे कारण मिल रहे थे पिता की मानसिक कष्ट विहीन हो जाएंगे मेरी वजह से अम्मा और बहनों को जो संताप और दुःख उठाने पड़ते हैं उससे वे मुक्त हो जाएंगी शनैः शनैः यह विचार मेरे अंतर्मन की आवाज बनता चला गया |"9

जुगनी, कुएं में कूदकर मरने के बजाय अब ट्रेन से कटकर जान देने का निर्णय लेती है, किंतु यहां भी वह असफल होती है। अंत में, वह रेलवे स्टेशन आकर ट्रेन से उन्नाव चली जाती है। धीरे-धीरे बहराजमऊ गांव पीछे छूट रहा था, लेकिन जुगनी को खुद भी नहीं पता था कि वह कहां जा रही है। रेल के डिब्बे में यात्रा के दौरान, उसके पैर में कांटा चुभ जाता है। एक प्रौढ़ व्यक्ति, कांटा निकालने के बहाने, उसके अंग को स्पर्श करता है और उससे जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करता है। जब उसे पता चलता है कि जुगनी अकेली यात्रा कर रही है, तो वह पूछता है–

"कहां जा रही हो?" मैं घबरा गई और रोने लगी। वह समझा कि मैं अपने बाएं पैर के तलवे से रिस रहे खून की वजह से रो रही हूं। मैंने अपने घाव की ओर देखा।"अरे, ला मैं देखूं... अभी निकाल देता हूं!" – वह प्रौढ़ मुझसे सटते हुए बोला। सामने की बर्थ खाली थी, और साइड की सीटों पर भी कोई नहीं था। मैं खिड़की की ओर खिसक गई। "नाम नहीं बताया तुमने अपना?" — उसने मेरे बाएं पैर का पंजा अपनी गोद में रख लिया और पूछा। मैंने सहमते हुए उत्तर दिया– "जुगनी।" "बहुत अच्छा नाम है!" – वह मेरे पैर पर हाथ सरकाने लगा। "अंकल जी, कांटा निकल चुका है," — मैंने अपना पैर उसकी गोद से हटाने की कोशिश की। "तभी तो खून रिस रहा है! अगर कांटा न निकला होता, तो खून नहीं निकलता," — प्रौढ़ ने मेरी पिंडली दबाते हुए कहा। मैं सहमी हुई थी, लेकिन उसकी गंदी हरकतें समझ रही थी। वह मेरे बाप के उम्र का था|" 10

गलत इरादे से, वह जुगनी को ₹20 का एक नोट देता है और उसे इशारे से बाथरूम की ओर बुलाने की कोशिश करता है। थोड़ी देर बाद, वह ₹50 का नोट दिखाता है और जबरदस्ती अपने साथ चलने का दबाव डालता है। लेकिन जुगनी उसके इरादों को भांप जाती है। उपन्यासकार उस क्षण का वर्णन करते हुए लिखता है-

"मैंने एक पल के लिए उस प्रौढ़ की ओर देखा। वह जा रहा था, लेकिन उसकी आँखों में मुझे वही झुंझलाहट और लालसा दिखाई दी, जैसे कोई शेर अपने नए शिकार को झुंझलाई और ललचाई नजरों से देख रहा हो। शायद उन्नाव आने वाला था, क्योंकि ट्रेन की गति धीरे-धीरे धीमी हो रही थी|"11

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

जुगनी ट्रेन से प्लेटफार्म में उतरकर एक बेंच पर सोती है तभी जुगनी को महसूस होता है कि-

“कोई मेरे बालों को सहला रहा है उभरी छतियों पर हाथ फेर उन्हें टटोलने में लगा हो मेरी नींद टूटी मैं जाग गई और उठकर बैठ गई | प्लेटफार्म की लाइटे जल रही थी शाम ढल चुकी थी पटरियों की ओर धुंधलाकर फैला हुआ था |”12

उस समय, जब समाज की रक्षा के लिए नियुक्त किए गए पुलिसकर्मी ही ऐसा घिनौना कृत्य कर रहे हों, तो फिर बाकी लोगों से क्या उम्मीद की जा सकती है? पुलिस वाला यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कोई उसे देख न ले, इसलिए वह जुगनी को जबरन कम रोशनी वाली जगह पर ले जाने की कोशिश कर रहा था। जुगनी पूरी तरह से डर चुकी थी।

“क्या सोचने लगी उसने मेरी बाई छाती बेरहमी से मसल दी मैं दर्द से रोने लगी उसने मुझे चिपका लिया वह मुझे सटकर बैठ गया और इधर-उधर छूते मेरा हाथ अपने घोड़े पर ले गया दबा इसे दबा जोर से पकड़ मैं डर गई और उसके घोड़े को दबाने लगी उसने मेरी छतिया सहलानी शुरू कर दी|” 13

जब जुगनी गंदी हरकतें करते हैं पुलिस वाले का विरोध करती है तब जुगनी को वह डराने लगता है कि

“हरामखोर सच बता घर से भाग कर आई है ना सिपाही कड़क और तेज आवाज में बोला|”14

इस संदर्भ में, लेखक यह बताना चाहता है कि आज भी हमारे देश में एक अनजान लड़की कितनी असुरक्षित है। अगर समाज की रक्षा करने वाला पुलिसकर्मी ही राक्षस बन जाए, तो भला एक लड़की अपनी सुरक्षा की उम्मीद किससे कर सकती है?

थोड़ी देर बाद, जुगनी को एक लड़का स्नान करता हुआ दिखाई देता है। वह चुपचाप उसके कपड़े चुरा लेती है और ट्रेन में जाकर उन्हें बदल लेती है। पुरुषों के वस्त्र पहनने के बाद, जुगनी को पहली बार सुरक्षित महसूस हुआ। किसी ने भी उस पर गलत नज़र डालने की कोशिश नहीं की। फिर वह कानपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ जाती है।

यात्रा के दौरान, एक पल के लिए उसे ऐसा लगा कि गंगा नदी में कूदकर अपनी जान दे दे। उसे लगा कि शायद ऐसा करने से वह अपनी सभी पीड़ाओं से मुक्त हो जाएगी। लेकिन उसने खुद को संभाला और कानपुर पहुँचने के बाद अपनी माँ को बुलवाया। कुछ दिनों तक वह अपनी मौसी के घर माँ के साथ रही।

जुगनी की माँ को उसकी चिंता सताने लगी–"अब जुगनी कहाँ रहेगी?" यह सोचकर, वह अपनी दीदी से आग्रह करती है कि वह जुगनी को अपने घर पर रहने दे। लेकिन इस पर जुगनी की मौसी स्पष्ट शब्दों में मना कर देती है और कहती है-

“तुम्हारे रहने तक जुगनी हमारे पास रह सकती है पर तुम्हें इसे अपने साथ ही लेकर जाना होगा| मैं एक हिजड़ा बच्चों को अपने साथ नहीं रख सकती हूं|”15

इस बात के संदर्भ में जुगनी सोचती है कि उसकी माँ के अलावा इस दुनिया में कोई भी उसे नहीं चाहता। उसे लगता है कि वह बस एक बोझ बनकर रह गई है। हर जगह अपमान, असुरक्षा और तिरस्कार के अलावा उसे कुछ नहीं मिला। उसके मन में बार-बार यही विचार आता है कि इस बेरहम दुनिया को अलविदा कह देना ही सही होगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

“हे ईश्वर ऐसा कौन सा पाप मैंने किया, जो तूने मुझे इस जीवन में हिजड़ा रूप दिया|”16
इस संदर्भ के माध्यम से लेखक यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि पूरे उपन्यास में जुगनी का जीवन पूरी तरह से त्रासदी से भरा हुआ है।

हर जगह स्वयं को असुरक्षित महसूस करने वाली जुगनी प्लेटफॉर्म पर भिखारियों के साथ खुद को बिल्कुल सुरक्षित पाती है।

कानपुर स्टेशन पर उसकी मुलाकात अनवर नामक एक लड़के से होती है और दोनों के बीच दोस्ती हो जाती है। लेकिन एक दिन, ट्रेन के नीचे आ जाने के कारण अनवर की मौत हो जाती है। इसके बाद, जुगनी "जुगनू" के रूप में संतोष सिंह की कैंटीन में काम करने लगती है।

वहीं पर 25-26 साल का एक युवक, प्रमोद भी काम करता था, लेकिन उसकी नीयत ठीक नहीं थी। वह गलत नजरों से आती-जाती लड़कियों और औरतों को घूरता रहता था। एक दिन, वह जुगनू से कहता है...

“तू साला एकदम लौंडिया लगता है उसने मुझे जोर से खींच लिया और गाल पर जोर से काट लिया|”17
इस प्रकार, चाहे नारी हो या हिजड़ा, वे हमेशा हवस का शिकार बनते रहते हैं। पायल का जीवन भी दुख और पीड़ाओं से भरा हुआ है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसके शरीर में पूरी तरह से स्त्री के सभी गुण दिखाई देने लगते हैं, और वह काम की तलाश में एक लड़की के रूप में नौकरी ढूंढने का प्रयास करने लगती है।

इसी कारण, वह कानपुर से लखनऊ आकर एक मंदिर में पहुंचती है। संयोगवश, उस समय मंदिर में जागरण हो रहा होता है, इसलिए वह वहां बैठ जाती है और फिर नाचने लगती है। कुछ ही दिनों में वह मंदिर में मशहूर हो जाती है।अचानक, एक दिन वह किन्नरों के हाथ लग जाती है। जुगनी को जबरन गोमती नगर में गुरु किन्नर मोना के पास लाया जाता है। वह बहुत चिल्लाती है, लेकिन कोई उसकी एक नहीं सुनता। रिया कहती है

“अरे छोड़ना नहीं ले चलो गुरुमाई | असली है,असली बुचरा हिजरा है देख क्या मस्त दूध है रिया ने मेरा बाया अंग बेरहमी से दबाते हुए कहा|”18
जुगनी कहती है, मैं अगर किन्नर हूं तो क्या हुआ? क्या किन्नर होना अपराध माना जाएगा? लेकिन उसकी आवाज़ अनसुनी कर दी जाती है। उसे एक कमरे में कैद कर दिया जाता है और जबरन किन्नरों वाले काम करने पर विवश किया जाता है।

“क्या एक किन्नर हो को बधाई टोली के अलावा अन्य कार्य दायित्व नहीं सौंप जा सकते हैं | मैं टॉकीज में प्रोजेक्टर चलाती हूं उससे पहले अन्य छोटे-मोटे कार्य भी मैंने किए हैं फिर मुझे क्यों बाध्य किया जा रहा है कि मैं इतनी तरह ताली पिटू ढोलक बजाऊ नाचू और बधाई गाऊं |”19
किन्नरों के डेरे में भी जुगनी के साथ मानसिक अत्याचार किया जाता है| तब्बसुम नमक किन्नर का यार पप्पू जुगनी को नंगी कर देता है तब जुगनी कहती है....

“निर्वस्त्र होने का आभास हुआ मुझे लगा कि मैं मर चुकी हूं और मेरी आत्मा मेरे शरीर से बाहर आ मेरी मृत्यु देख रही थी |”20
आगे चलकर लखनऊ में जुगनी पायल की छवि किन्नरों में एक दबंग किन्नर के रूप में प्रसिद्ध हो जाती है गुरु मोना किन्नर भी उसके रास्ते में अर्चन पैदा करती है परंतु जीत नहीं पाती मोना की मृत्यु

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

के बाद अनेक षड्यंत्र होते हैं किंतु पायल अंत में पायल सिंह के नाम से लखनऊ में प्रतिष्ठित किन्नर गुरु बन जाती है |

निष्कर्ष

भीष्म जी ने पायल सिंह का घर से चले जाने से लेकर किन्नर गुरु बनने तक की संघर्ष का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है और उपन्यास के माध्यम से किन्नरों के दुख पीड़ा और त्रासदी का चित्रण किया है |

संदर्भ-ग्रन्थ

1. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म, प्रस्तावना पृष्ठ संख्या 11**
2. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या 15**
3. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या 20**
4. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या 17**
5. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या 36**
6. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 39
7. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 37
8. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 36
9. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 41
10. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 44-45
11. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 47
12. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 48
13. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 49-50
14. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 50
15. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 51
16. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 82
17. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 73
18. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 93-94
19. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 98
20. **मैं पायल,महेंद्र भीष्म,पृष्ठ संख्या** 104